International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 8, Issue 01, January 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

''वाद्य वर्गीकरण का आधुनिक युग में संभाव्य परिवर्तन''

डॉ. अंकित पारीक
(संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर)

संगीतात्मक ध्वनि अथवा गति को प्रकट करने वालें उपकरणों को वाद्य कहा जाता हैं। विभिन्न वाद्यो द्वारा उत्पन्न स्वर व लय को वाद्य संगीत अथवा वादन कहते हैं। हमें वैदिक काल में वाद्यो का वर्गीकरण किसी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता हैं। किन्तु चार प्रकार के वाद्यो का उल्लेख मिल जाता हैं। रामायण तथा महाभारत में वादित्र के अन्तर्गत ही तत, अवनद्ध सुषिर तथा घन वाद्यो का वर्णन मिलता हैं। किन्तु हमें अलग से विभाजन नहीं मिलता। वाद्यों के बारे में लिखे गए प्रथम ग्रन्थ के वार्त्ता नारद और स्वाति है यह तथ्य भरत मुनि के द्वारा ही नाटयशास्त्र में स्पष्टता सें बताया गया हैं। वाद्याध्याय के प्रारम्भ में (अध्याय 33) में भरतमुनि कहते है–

मृंदग पणवानाञ्च दर्दुरस्थ तथैव च
गान्धर्वञ्चैव वाद्यञ्च स्वातिना नारदेन च।
विस्तार गुण सम्पन्नमुक्तं लक्षणकर्मतः
अनुवृत्या तदा स्वातिरातोधानां समासतः
पौष्कराणां प्रवक्ष्यामि निर्वृत्तिं सम्भवं तथा।।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

इसका तात्पर्य यह है कि स्वाति व नारद ने मृदंग, वणव, दर्दुर आदि अवनद्ध वाद्यो तन्त्री वाद्यों और अन्य वाद्यो के भी विस्तारर्पूक सुस्पष्ट लक्षण और वादन क्रम बताए है। उन्हीं का अनुसरण करके भरत ने पुष्कर आदि वाद्यो की उत्पत्ति बनाने का क्रम और वादन क्रम बताया।[1]

आधुनिक युग में वाद्य वर्गीकरण का संभाव्य परिवर्तन से पूर्व हम प्राचीन काल व मध्य काल में उल्लेखित वाद्य वर्गीकरण की चर्चा करेंगे, जो इस प्रकार है –

''प्राचीन काल में वाद्य वर्गीकरण''

हमें प्राचीनकालीन ग्रन्थों में नाद के दो भेद अनाहत और आहत प्राप्त होते हैं। आहत नाद जिसको हम सुन सकतें है, व्यवहार में ला सकते हैं, अपने पाँच ध्वनि रूपो में जिन्हें संगीतात्मक ध्वनियाँ कहते है प्रस्फुटित होता है। ये संगीतात्मक ध्वनियाँ नखज, वायुज, चर्मज, लोहज तथा शरीरज होती हैं। वीणा आदि वाद्य नखज है, वंशी वाद्य वायुज है, मृंदग वाद्य चर्मज है, ताल मंजीरा आदि लोहज है तथा कण्ठ ध्वनि शरीरज हैं।

इस प्रकार इन पाँच प्रकार के नाद को संगीत मकरंद में पंचविध नाद एवं नारदीय शिक्षा में ''पंचमहावाधानि'' कहा।

महर्षिं भरत जी एवं दत्तिल द्वारा वाद्यों की सख्या चार मानी है जो तत, अवनद्ध, घन एवं सुषिर है। भरत जी ने अवनद्ध वाद्यों के स्थान पर घन वाद्यो को अधिक प्रधानता दी। विद्वानो के अनुसार विभिन्न मतो के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जिन लोगो ने कण्ठ ध्वनि को भी वाद्य ध्वनि के अर्न्तगत ले लिया उन्होने कुल संख्या पाँच मानी तथा जिन्होने कण्ठ ध्वनि को वाद्यो से अलग रखा वे वाद्यो की ध्वनियाँ चार मानते है। प्राचीन युग में विकसित वाद्यों के प्रकारो को देखते हुए महर्षि भरत का वर्गीकरण सर्वथा उचित तथा पर्याप्त प्रतीत होता है उन्होने लिखा है–

ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च।
चतुर्विधं तु विज्ञेयभातोद्यं लक्षणान्वितम।।

इस प्रकार तत, अवनद्ध, घन एवं सुषिर क्रमशः तन्त्री वाद्य, पुष्कर वाद्य, ताल वाद्य तथा वंशी वाद्य है। महर्षि भरत के ग्रन्थ नाटयशास्त्र में समस्त वाद्यो को आतोद्य की भी संज्ञा दी।[2]

---

[1] **डॉ. अंजना भार्गव** – भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिन्तन प्रथम संस्करण (2002), पृ. सं. 44, 45
[2] **डॉ. लालमणि मिश्र** – भारतीय संगीत वाद्य, तृतीय संस्करण (2005), पृ. सं. 41, 42

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

"मध्यकाल में वाद्य वर्गीकरण"

मध्ययुग में हमें इन्ही चारो वाद्यो का वर्गीकरण प्राप्त होता है किन्तु दो परिवर्तन विशेष रूप से परिलक्षित होते हैं इनमें से प्रथम है वितत शब्द का प्रयोग जो अवनद्ध के स्थान पर हुआ है तथा दूसरा हैं ततानद्ध नाम का नया वर्गीकरण। ऐसा माना जाता है कि वितत शब्द का प्रयोग तानसेन तथा उसके बाद के कलाकारो द्वारा विशेष रूप से प्रचारित हुआ। तानसेन ने तत, वितत, घन तथा सुषिर नाम के वर्गीकरण का कई स्थानो पर उल्लेख किया हैं। प्राचीन ग्रन्थकारो ने जिसें अवनद्ध, आनद्ध या नद्ध वाद्य कहा है उसी को तानसेन जी ने वितत वाद्य कहा।

यह शब्द कहा से आया इसके लिए ऐसा माना जाता है कि यह शब्द तानसेन से पूर्व रचित संगीत चूड़ामणि में अवनद्ध वाद्य के स्थान पर प्रयोग हुआ है।

संगीत–चुड़ामणि के वित शब्द के ऊपर उक्त प्रयोग में पालि–साहित्य के आचार्यों का प्रभाव परिलक्षित होता है क्योंकि अभी तक के खोज के अनुसार 'विभानबथू तूरी' (बिन्दावन) के अन्तर्गत जिन पाँच प्रकार के वाद्यों का नामोल्लेख किया गया है उनमें तत को आतत तथा अनवद्ध को वितत कहा गया है। अतः कहा जा सकता है कि वितत शब्द पालि से आया और तत से तुक मिलने के कारण गायकों की भाषा में स्वीकार कर लिया गया। इस तरह मध्ययुग से दो धाराऐं एक साथ चल पड़ी। संगीत के संस्कृत ग्रन्थों में भारतीय परम्परा के अनुसार अनवद्ध शब्द का ही प्रयोग होता रहा। परन्तु कलाकार तथा बालेचाल की भाषा में अवनद्ध के स्थान पर वितत शब्द का प्रयोग होने लगा। सम्भवतः बोलचाल में यह शब्द 'तानसेन' के समय से काफी पहले प्रचार तें आ चुका था। क्योंकि तानसेन ने स्वयं तथा उसके पूर्ववर्ती कवि 'जायसी' ने भी वितत शब्द का प्रयोग किया है। उदाहरण –

तानसेन –

तत के पहले कहत है, वितत दूसरो जान।
तीजो धन चौथे सिखर तानसेन परमान।।
तार लगे सब साज के सो तत ही तुम मान।
चरम मढ्यो जाको मुख र वितत सुकहे बखान।।

कंसताल के आदि दै घन जिय जानउ मीत।

तानसेन संगीत रस वाजत सिखर पुनीत।।

जायसी –

तत वितत सिखर घन तारा, पाँचों शब्द होई झंकारा।

कुछ विद्वानों के अनुसार पृथ्वीराज रासो में भी वितत शब्द का प्रयोग किया गया है। उपर्युक्त उदाहरणों से यह भी स्पष्ट है कि वितत शब्द का प्रयोक अवनद्ध के स्थान पर ही किया गया है।[3]

''आधुनिक युग में संभाव्य परिवर्तन''

हमें प्राचीनकालीन एवं मध्यकालीन ग्रन्थों द्वारा वाद्यो के रूपो में कुछ परिवर्तन प्राप्त हुए हैं, तथा आज भी होते आ रहे है। कई ऐसे वाद्य भी निर्मित हो चुके है जिनका उपर्युक्त चार वर्गों के मूल सिद्धान्तो से सामजस्य नहीं बैठता फिर भी आधुनिक युग में हम इन सभी वाद्यो को किसी न किसी लक्षणों के आधार पर इन्ही चार वर्गों में विभाजित कर लेते है।

भारतीय वाद्यो का इतिहास देखने से पता चलता है कि उपंग जैसा वाद्य हमारे यहां बहुत पहले से मौजूद है। इसमें चमड़ा भी प्रयुक्त होता है और तार भी।

यह ताल वाद्य की श्रेणी में है। इस प्रकार गज से बजाये जाने वाले वाद्य सारंगी, रावणहत्था, इसराज आदि ऐसे वाद्य है। जिसमें चमड़ा भी प्रयुक्त होता है। किन्तु यह स्वर वाद्यों की श्रेणी में आते है। यह कथन उचित सा लगता है किन्तु उपंग वाद्य में ध्वनि उत्पादक चमड़े से नही अपितु तन्त्री से किया जाता है। और वह तन्त्री यहाँ स्वर की अपेक्षा लय और ताल को व्यक्त करती है। अवनद्ध वाद्यों के लिए यह एक बिल्कुल नयी दिशा है। अवनद्ध वाद्यो के लक्षणों के अनुसार यह वाद्य उनसे कुछ भिन्न हो जाता है। इस प्रकार के वाद्य का उल्लेख महाकवि वाण के हर्षचरित में आया है। जिसे वहाँ तन्ति पटहिका कहा जाता होगा। आज के गुपगुपी, आनन्द लहरी अथवा गोपीजन्त्र का जिसे मध्यकाल में उपंग कहा गया था यहीं रूप दिखाई पड़ता है। यह वाद्य अपने विशेष लक्षण के कारण भिन्न वर्ग की अपेक्षा रखते है। इस वाद्य का कोई नया नाम न रख कर तत एवं अवनद्ध इन दोनों लक्षणो की उपस्थिति के कारण

[3] **डॉ. जमुना प्रसाद पटेल –** ताल वाद्य परिचय, तृतीय संस्करण (2017), पृ. सं. 39

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

इन दोनो नामों को जोड़कर ही नया वर्ग बनाने की प्रथम कल्पना विमांनवत्थु में पायी जाती है। जिसमें ऐसे वाद्यो के लिए आतत–वितत नाम रखा गया है। उसके बाद संगीत पाठ नामक ग्रन्थ में इस प्रकार का वर्गीकरण मिलता है। यह ग्रन्थ हस्तलिखित रूप में रामनगर किले के सरस्वती भण्ड़ार ग्रंथालय में संग्रहीत है तथा अनुमानतः 16 शताब्दी के बाद की रचना मानी जाती है। इसमें तत, आनद्ध, ततानद्ध, घन तथा सुषिर इस प्रकार वाद्यो के पाँच वर्ग माने गये है। यहाँ भी ततानद्ध पूर्णवर्णित आतत वितत की आवश्यकता की पूर्ति करता है, हमारे देश मे मध्ययुग के आसपास एक नवीन वाद्य जलतरंग का विकास हुआ। संगीत परिजात में इसे घन वाद्य के अन्तर्गत माना गया है यहाँ यह बात विचारणीय है कि प्राचीन काल में घन वाद्यो का प्रयोग ताल एवं लय प्रदर्शन के लिए होता था। किन्तु जलतरंग का प्रयोग अन्य स्वर वाद्यो के अनुकूल राग के लिए गत अथवा गीत के लिए किया जाता है। इस कारण इस वाद्य को घन वाद्यों की श्रेणी में रखना अनुकूल नहीं था जलतरंग के समान ही कुछ वाद्य तरंग नाम के समान प्रसिद्ध हुए काष्ठ तरंग, घुंघरू तरंग, घण्टा तरंग, शीश तरंग, तबला तरंग आदि। भारतीय संगीत वाद्य के लेखक डॉ. लालमणि मिश्र जी के अनुसार इस प्रकार के वाद्यो में अवनद्ध वाद्यो के साथ–साथ स्वर वाद्यो के भी लक्षण होते है। अतः लालमणि मिश्र ने इनको अलग वर्ग में रखा जिसका नाम तरंग वाद्य बताया।[4]

इस प्रकार आधुनिक युग में पं लालमणि मिश्र ने अपने ग्रन्थ भारतीय संगीत वाद्य में तत, आनद्ध, ततानद्ध, घन, सुषिर तथा तरंग वाद्य के रूप में छः वाद्यो का वर्गीकरण कर आधुनिक युग में सभाव्य परिवर्तन को दर्शाया।

[4] **डॉ. लालमणि मिश्र –** भारतीय संगीत वाद्य, तृतीय संस्करण (2005), पृ. सं. 45

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)